वाणी

साधारण 'वाणी' का अर्थ बोली या उक्ति होता है। 'वाणी' शब्द का संबंध ध्रुपद गायन शैली से ही है। ''वाणी'' संस्कृत का शब्द है, जिसका अर्थ है 'शब्द' या 'कविता'। प्रत्येक वाणी की अपनी कुछ मौलिक विशेषताएँ है, उदाहरणार्थ कुछ में काव्य गायन का महत्व था तो कुछ में उच्चारण की शैली का महत्व था तथा कुछ में प्रदर्शन की शैली को अधिक महत्व दिया जाता था।

वाणीयों के मूल उद्‌गम स्थान के विषय में श्री प्रज्ञानन्द लिखते है कि 'वाणीयों का मूल उद्‌गम स्थान गीतियाँ है। वाणी का अर्थ है 'गीति की परम्परा के प्रकार।''

ध्रुपद गानेवाले को ''कलावन्त'' कहा जाता था तथा इन कलावन्तों की विभिन्न शैलीयों के आधार पर ही वाणीयाँ बनी है। आजकल के ख्याल के घराने भी इन्हीं वाणीयों का रूप है, कहा जा सकता है।

वाणीयों के प्रकार :

वाणीयाँ चार है, इनके नाम इसके प्रवर्त्तकों के अनुसार ही पड़े है। अकबर के समय में ध्रुपद गायन की चार शैलीयाँ प्रचलित थीं। कहते है अकबर के दरबार में चार बड़े–बड़े ध्रुपदिये रहते थे–

(1) तानसेन – गोबरहार वाणी

(2) बृजचंद ब्राह्मण – डागुर वाणी

(3) राजा समोखन सिंह – खंडार/खंडहार वाणी

(4) श्रीचंद्र राजपूत – नौहार वाणी

- **गोबरहार वाणी :**
  – तानसेन गौड ब्राह्मण होने के कारण उनकी वाणी का नाम 'गोबरहार' वाणी पड़ा।
  – इसे ''गौरारी वाणी'' भी कहा गया है।
  – गोबरहार वाणी को अन्य वाणीयों की अपेक्षा अधिक महत्व दिया जाता है। इसको 'शुद्ध वाणी' भी कहा जाता है।
  – स्पष्टता इसका प्रधान गुण है, यह शान्त रस की द्योतक है तथा इसकी गति विलम्बित मानी जाती है।
  – इन सब गुणों के कारण ही इसे राजा की उपाधी से विभूषित किया गया है।
  – इसके प्रतिनिधि वंशज प्यार खां व ज़ाफर खां माने जाते है, तथा किराना घराने के अब्दुल करीम खं साहब भी इसी वाणी की गायकी गाते थे।

- **खंडार वाणी :**
  – खंडार वाणी की विशेषता वैचित्र और ऐश्वर्य है।
  – यह तीव्र रसोद्दीपक है।
  – इसकी गति गोबरहार वाणी की अपेक्षा अधिक तेज होती है।
  – खंडार वाणी में स्वरों को खंड–खंड करके गाते है।
  – इसको सेनापति की उपाधि से विभूषित किया गया है।

– इसके प्रतिनिधि कलाकार रामपुर के वज़ीर अली है।

- **डागुर वाणी :**
  – 'डागुर वाणी' में सरलता और वैचित्र दोनों गुण पाये जाते है।
  – इसमें स्वर लालित्य पर अधिक ध्यान दिया जाता है।
  – इसकी गति सहज और सरल है।
  – स्वरों के मिलाप से वैचित्र के साथ–साथ सौन्दर्य की भी अभिवृद्धि होती है।
  – स्वरों को स्पष्ट रूप से व्यक्त न करके श्रोता की कल्पना के अनुसार ही स्वरों का प्रकटीकरण होता है।
  – इसको मंत्री की उपाधि से विभूषित किया गया है।
  – इसके प्रतिनिधि कलाकार युसूफ खाँ और वज़ीर खाँ माने जाते है। जयपुर के स्वर्गीय अल्लादियाँ खाँ भी इसी वाणी की गायकी गाते थे।

- **नौहार वाणी :**
  – 'नौहार वाणी' किसी विशेष रस की सृष्टी नहीं करती।
  – नौहार रीति से सिंह की गति का बोध होता है।
  – एक स्वर से दो–तीन स्वरों का लंघन करके परवर्ती स्वर पर पहुँचना इसका लक्षण है।
  – इस वाणी में वैचित्र अधिक नहीं है, पर लालित्यपूर्ण मानी जाती है।
  – इसकी गति मध्य व द्रुत मानी गई है।
  – इसको सेवक की उपाधि से विभूषित किया गया है।
  – इसके प्रतिनिधि कलाकार तानरस खाँ माने जाते है।

उपरोक्त चारों वाणीयाँ मध्यकाल में प्रचलित थी, क्योंकि इनका संबंध ध्रुपद गायकी के घरानों से था। ध्रुपद गायन प्रचार में होने के कारण इनका महत्व भी खूब था। इनसे संबंधित व्यक्ति भी प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाते थे।

Ruma Chakraborty

Vocal Instructor

P G Dept. of Music

Patna University